जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक ७ वा ❖ मार्च २०२२ ❖ वीर संवत २५४८ ❖ विक्रम संवत २०७८

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● पद्मश्री आचार्य चन्दनाजी म.सा.	१५	● सफल जीवन में समय का महत्त्व	४३
● जैन समाजाचा मोर्चा, पुणे	१७	● स्वत:चे अस्तित्व जपू या	४४
● जीतो कनेक्ट, पुणे	१९	● हास्य जागृति	४५
● चि. आदी व कु. आद्या चोरडिया - रेकॉर्ड	१९	● सुक्ति से मुक्ति : धन	५५
● वेरुळ लेणी समोरील महावीर जैन स्तंभ हटवण्याची तयारी	२०	● व्हॅलेंटाईन डे एक जागरुकता दिवस है	५८
		● रंगबिरंगी : २ रंग पत्नी के/गृहिणी के	६०
● कव्हर तपशील	२१	● छोड दीजिए	६१
● सदुपयोग और दुरुपयोग	२३	● क्या धार्मिक आयोजनों में आडम्बर प्रदर्शन एवं अपव्यय आवश्यक है ?	६३
● श्री सम्मेद शिखरजी सुरक्षित है और रहेगा	२६		
● अंतिम महागाथा : ३५ - दो तत्त्वों का द्वंद	२७	● जागृत विचार	६४
● जीवन जागृति	३०	● अपने को माध्यम समझें	६४
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम	३१	● दृष्टि दोष दूर हो	६७
● किसे कहाँ और कब केवलज्ञान हुआ ?	३७	● आत्मभान - आत्मज्ञान	६८
● जैन शासन के चमकते हीरे		● सुर्यदत्ता ग्रुप, नितीन गडकरी यांना पुरस्कार	६९
❊ सनतकुमार चक्रवर्ती	३९	● डॉ. संजय चोरडिया - उपाध्यक्षपदी	७१
❊ मेघकुमार	४०	● वाचकांचे मनोगत	७२
❊ रोहिणीयो चोर	४१	● माझे गुरुजी - निबंध स्पर्धा	७३

- नामको हॉस्पिटल, नाशिक ७५
- मार्केट यार्ड फ्रेंडस क्रिकेट लीग ७६
- संचेती ट्रस्ट, पुणे ७६
- अरिहंत सोशल ग्रुप, पुणे ७७
- महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स ७७
- ब्यावर १३ दीक्षा महोत्सव ७८
- डॉ. दिलीप धींग नई पुस्तक ७९
- नगरसेवक श्री. बाळासाहेब ओसवाल ८१
- नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले ८१
- मातोश्री स्व. रतनबाई व पिताश्री स्व. नगराजजी रांका – प्रतिमा ८२
- अमेरिका के ४० विश्व विद्यालय में जैन सिलेबस ८६
- शाश्वत भारत कृषि रथ – ज्ञान मोबाईल केंद्र ८८
- श्री. वालचंदजी संचेती, पुणे – सन्मान ८९
- विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

पद्मश्री आचार्य चन्दनाजी म.सा.

लेखिका : पद्मा बांठिया, पुणे

जीवन जीना उसी का सार्थक, जो जीया परहित,
लोक कल्याण का भाव ही रखता हरदम जीवित।

पू. आचार्य पदमश्री श्री. चन्दनाजी म. (ताई माँ) साधुसमाज की एक मात्र आचार्या और एकमात्र पद्मश्री से विभुषित साध्वीजी हैं। समाज तथा देश बड़ा गौरवान्वित है।

''सादा जीवन उच्च विचार'' की आप धनी है। सुलझे हुए स्पष्ट विचार प्रणाली के कारण आप हर मुश्कील संघर्ष का सामना करते हुए अपना मार्ग स्वयं तय करती है। आज के बिहार जैसे क्षेत्र में 'वीरायतन' संस्था पनपाना सामान्य बात नहीं है। अत्याधिक मेहनत, सहनशीलता, धैर्य, संघर्ष कठिनाइयों की परिसीमा पार करने के बाद आजका वीरायतन नजर आ रहा है। साध्वीमंडल सहकारियों का साथ, सहयोग से पनपा है 'वीरायतन'।

वीरायतन की भूमि भ. महावीर के पदचरणों से पावन हुई भूमि है। पड़ोस में पाँच पर्वत घेरे हुए है जहाँ गणधरों और साधुजनों के पवित्र चरणों से पाक हुआ है।

ऐसी पवित्र भूमि को बंजर और भ. महावीर के तत्त्वों से विरहित देखकर पू. कवि श्री अमरमुनि गुरुदेव ने ताई माँ से कहा इस पवित्र भूमि को पवित्रतासे उजागर करना चाहिए। बस्, एक शब्द ने ताई माँ को झकझोर दिया। भ. महावीर की मानसपुत्री अनजाने रास्ते पर चल पडी ऐसी चल पड़ी की पीछे मुडकर देखा ही नहीं। किसी का साथ नहीं, सद्भावनात्मानक नहीं, बल्कि तिरस्कार साधुपने की हिदायत से निंदा ही की पर वह तो झाँसीवाली रानी थी – कमर बाँधकर निकल पड़ी। जो भी रास्ते में अडेंगे आए इस महान व्यक्तित्व के सामने टिक नहीं पाए। ध्येय ही उच्च था – सेवा – शिक्षा – साधना। आज तीनों सूत्रों को आपने साध्य कर लिया है। फिर भी आज भी यही कहती है – ''अभीतक बहुत कुछ शेष है।''

'वीरायतन' केवल साधुओं को रहने का निवासस्थान मात्र नहीं है। वहाँ विशाल आय हॉस्पीटल है जहाँ अभावग्रस्त, दुखी, पीड़ित बीमार व्यक्ति को सांत्वना, उपचार, प्रेम, वात्सल्य, आरोग्य पूर्ण जीवन जीने का पूरा सहयोग, आश्वासन तथा वैसी ट्रीटमेंट दी जाती है। मरीजों को अस्पताल नहीं मंदिर लगता है। हजारों हजार आँखों के ऑपरेशन किए जाते है वह भी मुफ्त में। अपंगों को अपने पैरोंपर खड़े होने के लिए जयपूर फूट मुफ्त में बिठाए जाते हैं। वह भी बड़े सम्मान के साथ। शरीर ढँकने के लिए वस्त्र, सर्दी से बचने के लिए कम्बल, भूखे लोगों को अनाज के कीट ऐसे अपाहिज, अपंग, अनाथ, बेसहारा, लोग जिसमें सभी जाती, धर्म के लोग समाविष्ट है। जाति एक ही 'मानवता'। पंथ संप्रदाय धर्म से परे भूतदया आपमें कूट कूटकर भरी हुई है। पुराने पर आज अनावश्यक विचार, तत्वों को अपने पीछे छोड दिया है। वर्तमान में धर्म की व्याख्या आपने स्वयं ने बनाई है वह भी भ. महावीर के तत्वानुसार ही।

कहींपर भी बाढ भूकंप-भूखमरी, बीमारी का प्रकोप हुआ तो आप स्वयं वहाँ पहुँचकर घंटों में सारी व्यवस्था कर लोगों की तहेदिल से मदद करने में अग्रेसर रही है। कच्छ के भूकंप से समय २६ज़नवरी आपका जन्मदिन हजारों की संख्यामें लोग उपस्थित थे परंतु आप उसी क्षण कमर कसकर उन त्रस्त लोगों की मदद के लिए ऐसी पहुँची जैसे गगन से देवलोक का यान उतरा हो।

देह से आप जितनी सुकोमल है, हृदय उससे भी अधिक मधुरम पर हौसला अनुपात में उतनाही कठोर। 'हार' शब्द को आपने 'परिहार' कर दिया। आपके शब्दकोश में 'हार' को स्थान ही नहीं है।

कच्छमें भूकंप, नेपाल में भूकंप के समय कई संस्थाओंने काम किया पर आजतक कार्यरत रहकर टिकी है वीरायतन की कार्य पद्धति। ताईमाँने केवल वस्तुसे मदद नहीं की तो वहाँ हादसे के कारण बालकों भी मनःस्थिति डावाडौल हो रही थी ऐसे बालकों को गले लगाया। उन बच्चों के आँख के सामने ढहती इमारत के नीचे माँ बाप, भाई बहन, दादा दादी दबे जा रहे थे वह दृश्य बालकों के आँखों के सामने था। उनकी विक्षिप्त अवस्था हो रही थी ऐसे सारे बालकों को इकठ्ठा किया। उन्हें अपनी छत्रछाया दी। रहने की खाने-पीने की व्यवस्था की । जीने का हौसला दिया । उनका मन पढाई की ओर लगाया। आज वे अनाथ बालक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सफल जीवन जी रहे हैं यह है वास्तविक ''मानव सेवा''।

''जहाँ जिनालय वहाँ विद्यालय'' का नारा बुलंद किया। और ऐसी पाठशालाएँ बनवाई जो बड़े शहरों में भी नहीं होगी। पावपुरी की स्कूल देखकर कई शिक्षातज्ञों ने दांतों तले अुँगली दबाई। जो बालक तीर्थक्षेत्र में भीख माँगते थे वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। किताब से लेकर युनिफॉर्म तक सब मुफ्त में दिया जाता है। बच्चों को लाने ले जाने के लिए मुफ्त में बस की सुविधा भी की है। ताई माँ ने जो भी काम हाथ में लिया उसे रचनात्मक दृष्टि से पूर्ण किया।

मात्र भाषणबाजी नहीं प्रत्यक्ष कृति। उनकी हर कार्य की कृति बोलती है। इसीलिए उनके शब्द नपेतुले होते है।

इन्हीं सब बोलती कृतियों की दखल भारत सरकार तक पहुँची और आपको 'पद्मश्री' किताब से सम्मानित किया है।

आपकी सच्चाई प्रामाणिकता, अनुकंपा, करुणा, निःस्वार्थता, बुलंद हौसला, विनम्रता, विवेक, लंबी सूझबूझ, साथ में गुरुओंका आशीश इन सबका समन्वय है। वीरायतन जो पंचम काल के अंत तक बुलंद ही रहेगा। तभी तो देश विदेशों में चन्दना-युनिव्हर्सिटी पूरे जोश के साथ कार्यरत है।

ताई माँ के कार्यों को शब्दो में बाँधना केवल नामुमकीन है। कला के क्षेत्र में भी आप ब्राह्मी सुंदरी से कम नहीं है।

भ. महावीर ने मानवसेवा को प्राधान्य दिया है उसीके आधारपर आप मानव सेवा में अग्रेसर है। उसीको आपने जीवन के कण-कण में समा रखा है।

आप दर्शनाचार्य हैं। आगमों का गहन अध्ययन है। आपके अध्यवसाय आगम से जुडे हुए है। इसीलिए विचारों में प्रखरता है।

हृदय में स्थापित है आपकी मूर्ति,
जब चाहा तब झाँक लिया हो जाती तृप्ति।
आपका कार्य क्षेत्र अजरामजर है
अतः आप भी अजरामर है। ●

मैं शाकाहारी हूँ ।
मुझे गर्व है कि मेरे भोजन के लिए किसी निर्दोष जीव की हत्या नहीं होती । मेरा भोजन दर्द, तड़प, चीख और हिंसा से मुक्त है।

खा. महुआ मोईत्रा यांच्या विरोधात सकल जैन समाजाचा मोर्चा, पुणे

पुणे : तृणमूल काँग्रेसच्या खासदार महुआ मोईत्रा यांनी लोकसभेत अहिंसाप्रेमी आणि परोपकारी जैन समाजाबद्दल काही दिवसांपूर्वी केलेल्या आक्षेपार्ह वक्तव्यामुळे पुण्यातील सकल जैन संघ व अखिल भारतीय श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक युवक महासंघ यांनी उपजिल्हाधिकारी हिंमत खराडे यांच्याकडे महुआ मोईत्रा यांच्या विरोधात कारवाई करावी अशा मागणीचे निवेदन दिले आहे.

एकीकडे संपूर्ण जग जैन समाजाच्या संस्कार आहाराच्या कल्पनेचे कौतुक करत आहे व स्वीकारत आहे, अशातच महुआ मोईत्रा यांनी केलेल्या वक्तव्यामुळे तमाम मानवजातीचे अहिंसाप्रेमी दुखावले गेले आहेत. याला विरोध करण्यासाठी सकल जैन संघ व अखिल भारतीय श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक युवक महासंघ यांनी हिंमत खराडे निवासी उपजिल्हाधिकारी पुणे यांच्याकडे निवेदन सादर केले. खासदार मोईत्रा यांनी आपले वक्तव्य मागे घ्यावे आणि अहिंसा प्रिय जैन समाजाची माफी मागावी, ही जैन समाजाची इच्छा आहे, असे अचलजी जैन यांनी सांगितले.

सदनातील पटलावर अपमानजनक वक्तव्य करण्यापूर्वी मोईत्रा यांनी भारतीय संस्कृती, विशेषत्वाने जैन समाजाच्या भोजन संस्कारांवर थोडासा तरी अभ्यास करणे अपेक्षित होते. जैन समाज हा शाकाहारी समाज असल्याचे संपूर्ण जगात ओळखले जाते. शाकाहारी असणे ही जैन समाजाची ओळख आहे. आणि समाजासाठी ती गौरवाची बाब आहे. जैन युवकांनी मांसाहार करण्याचे निंदनीय वक्तव्य करून महुआ मोईत्रा यांनी जैन समाजाच्या नैतिकतेवर हल्ला चढवला आहे. ही घटना जैन समाजाच्या भावना, विचार आणि मूल्यांना खंडित करणारी असून, ते सहन केले जाऊ शकत नाही. जैन समाजाला आपल्या क्षुद्र राजकारणात ओढण्याचे प्रयत्न करू नका असेही त्यांनी सांगितले.

यावेळी सकल जैन संघ, जैन युवक महासंघ, वीतराग सेवा संघ, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज, अरिहंत जागृति मंच यांच्यासह अभयजी छाजेड, प्रवीणजी चोरबोले, महेंद्रजी मरलेचा, सतीशजी शहा, हरेशजी शाह, अनिलजी गेलडा, अनिलजी भंसाळी, जैन जागृति - संजयजी चोरडिया, समीरजी जैन, महेंद्रजी जैन, सम्पतजी जैन, विजयजी चोरडिया, हिराचंदजी राठोड, संदीपजी पारेख, बालचंदजी कटारिया, संतोषजी बोरा, विमलजी संघवी यांच्या सह जैन समाजातील अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

संपूर्ण भारतातून अशाप्रकारचे निवेदन विविध संस्था, आचार्य, गुरु भगवंताकडून संबंधित विभागाकडे कलेक्टर यांच्याकडे देण्यात आले. ●

कव्हर तपशील - मार्च २०२२

❖ **पद्मश्री आचार्य श्री चन्दनाजी म.सा.**
वीरायतन येथील आचार्य चन्दनाजी म.सा. यांनी मानव सेवेत अनेक वर्ष फार मोठे कार्य केले आहे. याबद्दल भारत सरकार तर्फे त्यांना पद्मश्री देऊन सन्मानित करण्यात आले. (लेख पान नं. १५)

❖ **पिताश्री नगराजजी व मातोश्री रतनबाई रांका, प्रतिमा – अयोध्यापूरम तीर्थ**
पुणे येथील रांका ज्वेलर्सचे संचालक श्री. फतेचंदजी व श्री. ओमप्रकाशजी रांका यांच्या मातोश्री स्व. रतनबाई नगराजजी रांका व पिताश्री स्व. नगराजजी वालचंदजी रांका यांची अर्धकृती प्रतिमा आयोध्यापूरम तीर्थाच्या मुख्य मंदिराच्या समोर विराजमान करण्यात आली आहे. या प्रतिमांचा लोकार्पण समारोह आचार्य श्री. बंधूबेलडी म.सा. आदि ठाणा यांच्या पावन निश्रेत रांका परिवारांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला.
(बातमी पान नं. ८७)

❖ **पितलिया दांपत्य, पुणे – दीक्षा समारोह, ब्यावर**
पुणे येथील श्री. विशनराजजी पितलिया व त्यांच्या पत्नी सौ. सुनंदाजी पितलिया ब्यावर येथे दीक्षा महोत्सवास गेले होते. यावेळी प्रवचन ऐकता ऐकता पितलिया दांपत्याचे उत्कृष्ट भाव झाले व त्यांनी लगेच दीक्षा घेतली.
(बातमी पान नं. ७९)

❖ **चि. आदी व कु. आद्या चोरडिया – आशिया बुक ऑफ रेकॉडस्**
पुणे येथील प्रवीण मसाले चे संचालक श्री. राजकुमारजी हुकमीचंदजी चोरडिया यांचे नातू व श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया यांचे सुपुत्र चि. आदी व सुपुत्री कु. आद्या यांनी सर्वात मोठे SLIME क्ले बनविल्याने ''इंडिया व आशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड'' मध्ये त्याची नोंद झाली आहे. (बातमी पान नं. १९)

❖ **शाश्वत भारत कृषि रथ – ज्ञान मोबाईल केंद्र**
भारतातील शेतकरी यांच्या कल्याणासाठी केंद्रीय कृषिमंत्री श्री. नरेंद्रसिंह तोमर यांनी ग्वालियर येथे शाश्वत भारत कृषि रथ नावाचा एक ज्ञान मोबाईल केंद्राचे उद्घाटन १३ फेब्रुवारी रोजी केले. सोबत द इको फैक्ट्री फौंडेशनचे श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया. (बातमी पान नं. ८८)

❖ **सकल जैन समाज, पुणे – कलेक्टर निवेदन**
पुणे : तृणमूल काँग्रेसच्या खासदार महुआ मोईत्रा यांनी लोकसभेत अहिंसाप्रेमी आणि परोपकारी जैन समाजाबद्दल काही दिवसांपूर्वी केलेल्या आक्षेपार्ह वक्तव्यामुळे पुण्यातील सकल जैन संघ यांनी उपजिल्हाधिकारी हिंमत खराडे यांच्याकडे महुआ मोईत्रा यांच्या विरोधात कारवाई करावी अशा मागणीचे निवेदन दिले आहे.
(बातमी पान नं. १७)

❖ **नगरसेवक श्री. बाळासाहेब ओसवाल, सन्मान**
पुणे शहरातील आदर्श नगरसेवक पुण्याचा यासाठी सकाळ ३ km. यांच्या तर्फे ऑनलाईन स्पर्धा घेण्यात आली. यात पुण्याच्या दक्षिण विभागामधून श्री. बाळासाहेबजी ओसवाल यांची निवड झाली.
(बातमी पान नं. ८१)

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे**
स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्टच्या वतीने भारतरत्न लता मंगेशकर यांना मार्केट यार्ड व्यापारी वर्गा तर्फे श्रद्धांजली कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७६)

❖ **सुर्यदत्ता ग्रुप तर्फे श्री. नितीनजी गडकरी यांना पुरस्कार**
पुणे : सुर्यदत्ता एज्युकेशन फाउंडेशनचा २४ वा वर्धापनदिन औचित्य साधून सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ

इन्स्टिट्यूट तर्फे दिला जाणारा सुर्यदत्ता राष्ट्रीय जीवनगौरव पुरस्कार २०२२ केंद्रीय रस्ते वाहतूक व महामार्ग मंत्री श्री. नितीनजी गडकरी यांना प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ६९)

❖ **श्री. वालचंदजी संचेती, पुणे – ज्येष्ठ मार्गदर्शक**
पुणे येथील ज्येष्ठ व्यापारी व पूना मर्चंट चेंबरचे माजी अध्यक्ष श्री. वालचंदजी संचेती यांचा कृषि उत्पन्न बाजार समिती, मार्केट कमिटी तर्फे ''ज्येष्ठ मार्गदर्शक'' म्हणून सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८९)

❖ **जीतो कनेक्ट, पुणे**
जीतो पुणे चॅप्टर तर्फे पुण्यात ६,७,८ मे २०२२ रोजी जीतो कनेक्टचे भव्य आयोजन करण्यात येत आहे. (बातमी पान नं. १९)

गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी
अक्षय तृतीया – वर्षीतप पारणा
मंगळवार – ३ मे २०२२

परम श्रध्देय आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांच्या पवित्र पावन जन्मभूमी चिचोंडी येथे उपाध्याय परम पूज्य श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांच्या प्रेरणेने भव्य गुरु आनंद तीर्थ उभारले जात आहे.

गुरु आनंद तीर्थ चिचोंडी येथे गत अनेक वर्षापासून वर्षीतप पारणा महोत्सवाचे आयोजन केले जात आहे. या वर्षी मंगळवार ३ मे २०२२ रोजी अक्षय तृतीयाच्या दिवशी वर्षीतप पारण्याचे आयोजन साधू-साध्वी यांच्या निश्रेत केले जाणार आहे. तरी वर्षीतप तपस्वींनी पारणा महोत्सवासाठी आपले नाव नोंदवावे.

संपर्क : गुरु आनंद फौंडेशन,
संजय गुगळे – ९४२२२३९९८८
दिलीप गुगळे – ९८५०७१४१६४ ●

श्री बुधवार पेठ पाबळ यात्रा जैन मंडळ
३३८, बुधवार पेठ, पुणे-४११००२.
फोन : ०२०-२४४५४००५, मो. : ९८५०५६६०६३
श्री गिरनारजी - शंखेश्वरजी-सोमनाथ-चुली तीर्थ यात्रा संघ
१) मंगळवार दि. १०/५/२०२२ से रविवार १५/५/२०२२ रु. ६०००/-
२) मंगळवार दि. २/८/२०२२ से रविवार ७/८/२०२२ रु. ६०००/-
३) मंगळवार दि. २०/९/२०२२ से रविवार २५/९/२०२२ रु. ६०००/-
जानेका नॉन A/C रेल, आनेका रेल A/C से केटरिंग के साथ
संघपति – रु. ५१००/-
संपर्क : विनोद संघवी – ९८५०५६६०६३
पियुष शहा – ९८६०४०३०००
जितेश जैन : ९८२२२७००१२
सभी बुकिंग दि. १०/३/२०२२ से शुरु होगी
विनोद संघवी - संघवी एजन्सी, ३३८ बुधवार पेठ, पुणे २.
जैन मंदिर के नीचे, सिटी पोस्ट के सामने की गल्ली, श्रीकृष्ण टॉकीज के पास
सुबह १०.०० से २.०० बजे तक (रविवार बंद),
टिकट कॅन्सल होनेसे २५% कट होगा।

सदुपयोग और दुरुपयोग

प्रवचनकार : आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय अनमोल वाणी से निरन्तर सदुपयोग दुरुपयोग की बात आपके सामने रखी जा रही है। सारी विचार धाराएँ, सारी मान्यताएँ, सारा आचरण, सदुपयोग और दुरुपयोग इन दो शब्दों में आ जाता है। दुरुपयोग करने पर वह मन-दण्ड बनता है, वचन - दण्ड बनता है एवं काय - दण्ड बनता है और सदुपयोग करने पर मन-निधान, वचन-निधान एवं काया-निधान बनता है। आप निरन्तर सुन रहे हैं, ऐसा नहीं है कि आपने इस वाक्य को व्यवहार में भुला दिया है। अपने बढ़िया बंगले में कोई गली-मौहल्ले का कूड़ा-कचरा नहीं भरता है। अपनी रसोई में कोई शौच-निवृत्त नहीं करता है। अपने सोने-चाँदी के गहने कोई पालतू पशु को नहीं पहनाता है। संसार व्यवहार में आप सब हेय उपादेय के व्यवहार का ध्यान रखते हैं। किसी चोर डाकू की जमानत या साक्षी देनी पड़े तो आपमें से कौन तैयार होगा? किसी आतंकवादी को कौन घर में आश्रय व दुकान में नौकरी देने को तत्पर होगा? आप यह चिन्तन तो करें कि चौरासी लाख जीवयोंनियों में भटकते- भटकते चिन्तामणि रत्न के समान यह जो अनमोल नर तन पाया है, नर से नारायण बनाने वाले इस तन को पाकर क्या करना चाहिए? इस तन को किसमें लगाना चाहिए? मैं जो बात कह रहा हूँ यह आपके समझ में आ रही है ना!

आप स्वयं सोचें, विचार करें, जिन पर आपको राग है उनके प्रति आपका कैसा व्यवहार रहता है? और जिन पर राग नहीं है उनके प्रति कैसा व्यवहार होता है? आपका लड़का काला कलूटा है, नाक झर रहा है, मुँह से लार टपक रही है, किन्तु राग है इसलिए वह आपके लिए राजकुमार है। एक दूसरे का लड़का है, वह चाहे सर्वांग सुन्दर है फिर भी आप कहीं खोट निकाल कर यह तो नहीं कह देंगे कि यह लड़का एक आँख से टेढ़ा देखता है? तन सुन्दर है फिर भी उसके प्रति राग नहीं, तो सुन्दरता होते हुए भी सुन्दरता नहीं दिखती। एक दूसरे गाँव का आदमी कभी आपसे पूछे- अमुक का घर कैसा है? यदि राग है तो आप उस घर की दस खूबियाँ गिना देंगे और राग नहीं तो कुछ भी कह देंगे। एक नादान है, ना समझ है वह तो फिर भी सहनशीलता रख रहा है, पर जो समझदार है, ज्ञानी है, धर्मी कहलाता है वह यदि अहंकार में डूबा है तो समझदार कैसा? आप यहाँ बैठे हैं, समता की बात सुन रहे हैं, सम्यक् दर्शन की बातें सुन रहे हैं। आपने संसार से तिराने वाली बातें भी कितनी ही बार सुनी हैं, समझी हैं, पर राग-द्वेष के बंधन में ऐसे बंधे हुए हैं कि सब कुछ सुनकर भी आपके व्यवहार में सुनने का सार नज़र नहीं आ रहा है। आप समझदार कहलाना चाहते हैं, पाट के पाये बने हुए हैं, फिर भी वही की वही स्थिति है, कोई बदलाव नहीं?

यदि अच्छी बात सुनकर-समझकर भी आपके व्यवहार में नहीं आई तो नतीजा क्या? आप स्वयं चिन्तन करें। सिनेमा में रील चल रही है, बिजली कभी बन्द हो सकती है, मोबाइल खराब हो सकता है, पर यह जो कर्म की रील चल रही है वह कभी खराब हुई नहीं और होगी नहीं। कर्म की रील हर क्षण-हर पल जैसा कर रहे हैं वैसा फोटो उतार रही है। आप क्या कर रहे हैं? कैसा कर रहे हैं? किस भावना से कर रहे हैं, कर्म की रील में सब उतर रहा है। आप चाहे सारी दुनिया को ठग लीजिए, चाहे वेष परिवर्तन कर लीजिए, सब-कुछ बदल लीजिए, पर भीतर की भावना नहीं बदली तो कर्मों से कभी बच नहीं सकते।

आश्चर्य है, सबसे बड़ा आश्चर्य है, इतना सब करके आदमी कहता है- हे भगवान् ! में ऐड़ों कांई करियो जो ऐड़ो संकट म्हारे आयो है। कहने वाले यह भी कहते हैं- भगवान् जाने किस जन्म के कर्म उदय में आए हैं? इसके साथ मेरी क्या दुश्मनी है, मेरा क्या वैर है जो यह मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा है। ऐसा व्यवहार रखकर, आप भगवान के चरणों में पहुँचकर क्या सिफारिश करना चाहते हैं? मैं एक बात पूछुँ- आपके पास कोई चोर आकर रहना चाहे तो क्या आप उसे अपने पास रखेंगे? आप चोर को न घर में रखना चाहेंगे और न ही दूसरों के पास रखने को कहेंगे। जब आप उसकी कोई सहायता नहीं करना चाहते, तो क्या भगवान उनकी सहायता करेंगे?

भगवान से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। भगवान से माँगने वाले अपना व्यवहार बदलने की क्यों नहीं सोचते? दुख है तो दुख आया कहाँ से? दुख पैदा किसने किया? दुख काटने वाला कौन? आपको ज्ञात होना चाहिए कि दुख भी स्वयं ने पैदा किया है एवं खुद ही उसे काट सकते हैं।

ओ घर खराब है, आ दुकान सुगनां (शकुना) री नहीं, छोरा रो नक्षत्र ठीक नहीं, इण बहू रो पगफेरों खराब (घर में पैर रखना अपशकुन) है। आदमी ऐसा न जाने कैसी-कैसी बातें बोल जाता है? किन-किन पर दोषारोपण करता है? क्या-क्या सोचता है? आप अपना चिन्तन करें। आप चिन्तन करेंगे तो ही आपको लगेगा, मैं कैसे अपने आपको सुधारूँ? मुझमें क्या-क्या दोष हैं? जिस दिन आप अपने दोषों को निकालने की सोचेगें। उस दिन आपका शुभ चिन्तन रूप मननिधान बन जायेगा। आपका हर चिन्तन, कर्म काटने वाला बन सकता है। आपके हर व्यवहार से पुण्य अर्जित किया जा सकता है, हर कर्म, निर्जरा करने वाला बन सकता है। परन्तु कब? जब आप अपने मन, वाणी और शरीर का सदुपयोग करेंगे। जो योग्यता मिली है, जो सामर्थ्य मिला है और जो परिस्थिति मिली है, उसका सदुपयोग करेंगे तब ।

आज ऋण लेकर मकान बनाने का युग है। न जाने किससे धन लेकर, किससे उधार लेकर मकान बनाया और उस पर अपना नाम लिखा दिया? माल किसी दूसरे का है, सहायता किसी दूसरे ने की है, मेहनत किसी और की है, बीसियों जगह से लोन लिया है, फिर यह मकान किसका ? खुद के घर का क्या लगा? लिया दूसरों से है और नाम अपना। हमारी ये वृत्तियाँ, हमारा यह चिन्तन जब तक नहीं बदलता तब तक हम खुद असमाधि में रहेंगे और साथ रहने वाले भी दुविधा में ही रहेंगे। भावना ही फलवती होती है। अन्तर के परिणाम अगर शुभ हैं तो कार्य का परिणाम भी शुभ ही होगा। संघ समाज में भी आज इसी विवेक दृष्टि की आवश्यकता है। आप किसी भी रूप में संघ-सेवा करें, अन्तर की निर्मलता के साथ करें, विनय व विवेक के साथ करें, उसमें कर्त्तापन का भाव न हो। तब छोटा सा कार्य भी अधिक फलदायी बन जाता है। जो भी करें निस्वार्थ, निरभिमान वृत्ति से करें, सेवा, श्रद्धा व समर्पण की भावना से करें। रात-दिन दान देने वाला आँखे नीची रखता है। एवं उलीच भाव से देता है, क्यों? वह तो यही सोचता है-देने वाला देत है, देता है दिन रैन, लोग भरम मुझ पर करे, इण सूं नींचा नैन । पुण्योदय से जो पाया है वह उपभोग के लिए नहीं, सदुपयोग के लिए है। आप सोचें-"मुझे तो यह पूर्व पुण्याई से मिला है, मैं कहाँ दे रहा हूँ? मैं तो एक माध्यम मात्र हूँ। ग्रहण करने वाला स्वीकार कर मुझ पर उपकार कर रहा है। संघ-सेवा में लेने आने वाला भाई मेरा बोझ हलका करने आया है, मुझे सेवा का अवसर देने आया है। इस भाव से किया गया दान ही सार्थक है अन्यथा नाम व प्रसिद्धि के लिए दिया गया दान तो लाखों की सम्पत्ति का सौदा कौड़ियों के बदले करने जैसा है।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) की बात याद आती है, उन्होंने कहा- मेड़ता में कभी चौरासी गच्छ के चौरासी स्थानक थे। किसी

पुण्यशाली जीव ने यह सोचकर कि मेरे पास दो मकान हैं, रहने के लिए एक पर्याप्त है, क्यों नहीं मैं एक मकान धर्म-साधना के लिए दे दूँ? ऐसे थे वे श्रावक। आज की स्थिति क्या है? कई ट्रस्टी अपने को मालिक मान बैठे हैं। कहना होगा- कई हैं जो धर्मादा करते नहीं है, धर्मादा खा रहे हैं। न जाने कितने लोगों ने दयालुता पूर्वक अपनी पूँजी लगाई, द्रव्य का ही नहीं समय का भी भोग दिया, किन्तु स्वामित्व कोई और जताते हैं। बनाया किसी और ने था, लड़ते कोई दूसरे ही हैं। यह नासमझी है। जो छूट जाने वाला है तथा जो अपना नहीं है उसे अपना मानना ईमानदारी नहीं है।

बात को समय के साथ पूरी करूँ। सबसे पहले हम तीर्थंकर भगवान् की भाषा में समझें- न यह तन मेरा है, न यह जमीन मेरी है और न ही यह भवन मेरा है। मेरा होता तो छोड़कर जाता नहीं छोड़कर जाता है इसलिए मेरा नहीं है। आप अभी हाँ में सिर हिला रहे हैं, परन्तु यह बात जीवन में प्रभाव छोड़े तो बात बने। आप पुण्यशाली हैं। पुण्यशालिता के बल पर यहाँ तक पहुँचे हैं। आप अपनी दृष्टि को पवित्र करेंगे और आपके सम्पर्क में जो भी हैं उनको इस तथ्य से अवगत कराने का लक्ष्य रखेंगे तो आपका यहाँ आना और सुनना सार्थक होगा। कहने को तो आपमें से कई कह जाते हैं जीव अकेला आया, अकेला जायेगा। कहना और बात है, कहे अनुसार जीवन में उतर जाय तो फिर कहना ही क्या । मैं कह गया- पशु को कोई हार नहीं पहनाता, बंगले में गली का कूड़ा-कचरा कोई नहीं भरता। फिर आप इस अनमोल तन में कितने-कितने पाप भर रहे हैं, स्वयं सोचें? नहीं तो फिर वह कहावत सच हो जाएगी- ऊँचे चढ़ कर देखो, घर-घर यो ही लेखो (विचारपूर्वक देखने से लगेगा कि अपनी आंतरिक स्थिति सबके जैसी ही खराब है)। आप अपनी दृष्टि बदलें, प्राप्त अवसर का सदुपयोग करें तभी आपका सुनना सार्थक होगा। ●

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग

जैन जागृति

जैन जागृतित जाहिरात देऊन
जैन समाजाशी संवाद साधा.

"भगवान महावीर जन्मकल्याणक अंक" - एप्रिल २०२२

आजच या अंकात जाहिरात द्या.

एप्रिल २०२२ अंकासाठी १८ मार्च २०२२ पर्यंत जाहिरात पाठवा.

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ८५००/-*
१/२ पान	रु. ४६००/-*
*डिझाईन व पॉझेटिव्ह खर्च वेगळा	
GST - 5% Extra.	

व्हाईट पेपरवर एका रंगात(Black & White) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ४०००/-
१/२ पान	रु. २४००/-
१/४ पान	रु. १२५०/-
१/८ पान	रु. ८००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात 'जैन जागृति' हे सर्वांत प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात 'जैन जागृति' मध्ये द्या. - संपादक

E-mail - jainjagruti1969@gmail.com website - www.jainjagruti.in

श्री सम्मेद शिखरजी सुरक्षित है और रहेगा
राष्ट्रीय दिगम्बर जैन संस्थाओं का समाज को संदेश

वर्तमान में व्हाट्सअॅप एवं सोशल मीडिया पर बिना पूरी जानकारी के अभाव में और कुछ पीत पत्रकारिता के शौकीन लोगों द्वारा 'शिखर जी बचाओ'- 'जागो जैन जागो' तीर्थराज खतरे में है और यहाँ तक भारत बन्द के सन्देश निरन्तर आ रहे है। समाज का चिन्तित होना स्वाभाविक है। हमारे पूज्य त्यागीजन स्थिति से परिचित हैं और उन्होंने अपने संदेशों में श्री सम्मेद शिखर जी से जुड़ी अफवाहों का खण्डन करते हुए समाज को स्पष्ट संदेश भी दिया है।

संथाली आदिवासियों की मकर संक्रांति के अवसर पर १४-१५ जनवरी को मान्यता के अनुसार पर्वत की पूजा अर्चना के लिए श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर जाने की प्रथा सदैव से चली आ रही है। स्थानीय मान्यता के अनुसार श्री महावीरजी में भी महावीर जयन्ती के अवसर पर आदिवासी गूजर मीणा का लक्खी मेला लगता है। इससे हमारे तीर्थों की पवित्रता किसी भी रूप में भंग नहीं होती। स्थानीय मान्यताओं का सम्मान करना समाज के हित में है। श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर प्रत्यक्ष दर्शी यात्रियों के अनुसार अभक्ष्य भोजन या अनुचित व्यवहार से पवित्रता भंग करने का कोई प्रयास नहीं हुआ है। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने स्थानीय प्रशासन के पूरे सहयोग से हर प्रकार की सतर्कता बरती है और यात्रियों की यात्रा पूर्व चैकिंग का प्रभावी सिस्टम बनाया जा रहा है।

जहाँ तक बीस पंथी कोठी की श्री सम्मेद शिखर चढाई पर मिल्कियत एवं कब्जे वाली जमीन पर झारखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री. बाबूलालजी मरांडी द्वारा तथाकथित आदिवासी मन्दिर के शिलान्यास की घटना है, वह भ्रमवश हुई है और श्री मरांडी ने उस पर खेद भी व्यक्त किया है और उसे रोकने का पक्का आश्वासन दिया है। इसकी एफ. आई. आर. तुरन्त कराई गई है और सुप्रीम कोर्ट तक त्वरित रोक लगाने की पैरवी सजग सक्षम रूप से की जा रही है। वहाँ केवल भूमि में एक खड्डा और बोर्ड लगा हुआ है और राष्ट्रीय संस्थाओं का समाज को वादा है कि न केवल वहाँ बल्कि पूरे पर्वतराज पर कोई इतर धर्म का मन्दिर नहीं बनने दिया जायेगा।

झारखण्ड सरकार से श्री सम्मेद शिखर जी को पवित्र तीर्थ स्थल घोषित कराने के प्रभावी प्रयास किये जा रहे हैं। पूर्व में भी अथक प्रयासों से राज्य सरकार द्वारा श्री सम्मेद शिखर जी को जैनों का 'सर्वोच्च पवित्र तीर्थ स्थल सरकारी अधिसूचना द्वारा घोषित करवाया गया है।

तिल का पहाड़ बनाने से समाज का कोई लाभ नहीं होने वाला है। करबद्ध निवेदन है कि भ्रमित संदेशों वीडियों पर विश्वास करने या फारवर्ड करने से पूर्व अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संस्थाओं की समन्वय समिति के कार्यालय मोबाइल / व्हाट्सअॅप नम्बर ८०७६१ ५६६५३ से पूरी जानकारी ले लें। आपका शंका समाधान हो जायेगा क्योंकि सभी राष्ट्रीय संस्थाएँ और विशेषकर तीर्थराज की प्रबन्धक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी पूर्णतया सजग और किसी भी स्थिति का समाधान खोजने में सक्षम हैं और तीर्थराज के कण-कण की पवित्रता अक्षुण बनाए रखने को प्रतिज्ञाबद्ध हैं। श्री सम्मेद शिखर जी की सुरक्षा एवं पवित्रता अक्षुण है और रहेगी। समाज अपनी राष्ट्रीय संस्थाओं और तीर्थ क्षेत्र कमेटी पर अडिग विश्वास बनाये रखें और आपका सहयोग हमारे हाथ मजबूत करेगा।

अध्यक्ष : गजराज जैन गंगवाल
श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा ●